विज्ञानकु में वैज्ञानिकों के विचार

सुरेंद्रा लखेड़ाविज्ञानकु के माध्यम से वैज्ञानिकों के विचारों को उद्धृत करना विज्ञान और साहित्य को जोड़ने का एक रोचक प्रयास है। हाइकु से प्रेरित इस लघु काव्य-विधा में तीन पंक्तियां होती हैं, जिनमें क्रमशः पांच, सात और पांच अक्षरों का विन्यास रखा जाता है। इसका उद्देश्य वैज्ञानिकों के विचारों को संक्षिप्त, सहज और काव्यात्मक रूप में पाठकों तक पहुंचाना है। वैज्ञानिकों के परिचय में इसका उपयोग केवल उनके नाम बताने तक सीमित न रहे; उनकी खोज, वैज्ञानिक दृष्टि अथवा समाज के प्रति योगदान की झलक भी सामने आए। प्रत्येक वैज्ञानिक पर केंद्रित विज्ञानकु के साथ छोटा सा तथ्यात्मक परिचय जोड़कर कविता की रोचकता और जानकारी की स्पष्टता को एक साथ रखा जा सकता है। सुभाष चंद्र लखेड़ा की रचना 'विज्ञानकु- विज्ञान प्रसार' में वैज्ञानिकों और गणितज्ञों से परिचित कराने की भावना इस प्रकार व्यक्त हुई है-

आओ बतायें
कौन रामानुजन
कौन थे रमन।

हमें हो ज्ञान
कौन होमी जे भाभा कौन कलाम।

यही संदेश
साराभाई जैसों को
भूले न देश।

ये विज्ञानकु विस्तृत जीवन-परिचय नहीं देते, बल्कि वैज्ञानिको के विचारों को काव्यात्मक तरीके से बताते हैं। इस दृष्टि से वैज्ञानिकों पर विज्ञानकु लेखन का उद्देश्य हो सकता है– नाम से पहचान, योगदान से परिचय और प्रश्नों से आगे जानने की जिज्ञासा। हां मार्गदर्शन के लिए कुछ ऐसे विज्ञानकु दिए जा रहे हैं जो हमें भारत के प्राचीन और अर्वाचीन वैज्ञानिको के विचारों से आसानी से परिचित करा देते हैं सर्वप्रथम यहां भारत के प्राचीन मनीषियों चरक, सुश्रुत और आचार्य वराह मिहिर पर लिखे विज्ञानकु उद्धृत किए जा रहे हैं। चरक, सुश्रुत और आचार्य वराहमिहिर प्राचीन भारत की ज्ञानपरंपरा के प्रमुख आचार्य थे। चिकित्सा, शल्यचिकित्सा और खगोलशास्त्र में उनके योगदान का ऐतिहासिक महत्त्व है।

1. चरक चरक प्राचीन भारत के प्रसिद्ध चिकित्सक और आयुर्वेद के प्रमुख आचार्य थे। उनसे संबद्ध 'चरक संहिता' आयुर्वेद का आधारभूत ग्रंथ है, जिसमें रोगों के कारण, लक्षण, निदान और उपचार का व्यवस्थित विवेचन मिलता है। उन्होंने रोगों के उपचार के साथ स्वास्थ्य की रक्षा और रोगों की रोकथाम पर भी बल दिया। उनका योगदान आयुर्वेद को एक व्यापक चिकित्सा-पद्धति के रूप में व्यवस्थित करने में महत्त्वपूर्ण रहा।

2. सुश्रुत सुश्रुत प्राचीन भारत के महान शल्यचिकित्सक थे, जिन्हें प्रायः 'शल्यचिकित्सा का जनक' कहा जाता है। उनसे संबद्ध 'सुश्रुत संहिता' में शल्यक्रियाओं, शल्य-उपकरणों तथा शरीर-रचना का विस्तृत वर्णन मिलता है। विशेष रूप से नाक के पुनर्निर्माण, घावों की चिकित्सा और मूत्राशय की पथरी निकालने जैसी प्रक्रियाओं का उल्लेख उनके शल्यज्ञान को दर्शाता है। इस ग्रंथ का प्राचीन भारतीय शल्यचिकित्सा के इतिहास में विशिष्ट स्थान है।

विज्ञानकु- चरक - सुश्रुत

चरक हुए
तीन सौ ईसा पूर्व
वे थे अपूर्व।

विश्व चर्चित
है चरक संहिता
ग्रंथ उनका।

आयुर्वेद के
मूलभूत ग्रन्थों में
है यह एक।

गौर तलब
न्यूयॉर्क सिटी में है
चरक क्लब।

सुश्रुत हुए
आठ सौ ईसा पूर्व
वे थे अपूर्व।

विश्व चर्चित
है सुश्रुत संहिता
ग्रंथ उनका।

अरबी में है
किताब ए सुस्रुद
नाम इसका।

आयुर्वेद के
मूलभूत ग्रन्थों में
है यह एक।

3. आचार्य वराहमिहिर आचार्य वराहमिहिर छठी शताब्दी के प्रसिद्ध खगोलविद्, गणितज्ञ और ज्योतिषाचार्य थे, जिनका कार्यक्षेत्र उज्जैन था। उनकी प्रमुख रचनाएँ 'पंचसिद्धांतिका', 'बृहत्संहिता' और 'बृहत्जातक' हैं। 'पंचसिद्धांतिका' में विभिन्न खगोलीय परंपराओं का संकलन है, जबकि 'बृहत्संहिता' खगोल, ज्योतिष तथा अनेक अन्य विषयों को समेटने वाला विश्वकोशीय ग्रंथ है। उन्होंने विविध ज्ञानपरंपराओं के अध्ययन और समन्वय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विज्ञानकु- आचार्य वराहमिहिर

थे गणितज्ञ
वराहमिहिर जी
थे बहुविज्ञ।

बारह ग्रंथ
वराहमिहिर के
विश्व स्तर के।

नमन उन्हें
पंचसिद्धान्तिका को
लिखा उन्होंने।

पांच सिद्धांत
हैं खगोल शास्त्र के
इस ग्रंथ में।

धरा है गोल
समझाया उन्होंने
हमें खगोल।

जन्म हुआ था
उज्जैन में उनका
गांव कायथा।

जानकारी ये
नवरत्नों में थे वे
चंद्रगुप्त के।

प्राचीन भारतीय मनीषियों से संबंधित विज्ञानकु उद्धृत करने के बाद अब यहां तीन आधुनिक भारतीय वैज्ञानिकों की सोच से संबंधित विज्ञानकु दिए जा रहे हैं। ये टीन वैज्ञानिक सर सी वी रामन, डॉ. दौलत सिंह कोठारी और डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम हैं।

1. सर सी. वी. रामन- सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् (7 नवंबर 1888 - 21 नवंबर 1970) भारत के महान भौतिक विज्ञानी थे। उन्होंने 1928 में प्रकाश के प्रकीर्णन से संबंधित रामन प्रभाव की खोज की। इसके अनुसार, किसी पदार्थ से प्रकीर्णित होने वाले प्रकाश के एक छोटे अंश की तरंगदैर्घ्य बदल जाती है। इस महत्त्वपूर्ण खोज के लिए उन्हें 1930 में भौतिकी का नोबेल पुरस्कार मिला। रामन्र भाव आज भी पदार्थों की संरचना और गुणों के अध्ययन का महत्त्वपूर्ण आधार है।

विज्ञानकु- सर सी वी रामन्

मेरी सलाह
युवा न हों निराश
साहसी बनें।

राष्ट्र निर्माण
वे युवा करें तय
हों जो निर्भय।

सतही ज्ञान
इससे नहीं बना
कोई महान।

स्वतंत्र सोच
विज्ञान का आधार
मेरा विचार।

सफल होगे
असफलताओं से
यदि सीखोगे।

मेरा आह्वान
मातृभाषा में सभी
पढ़ें विज्ञान।

विजयी भाव
मिटायेगा गरीबी
और अभाव।

2. डॉ. दौलत सिंह कोठारी डॉ. दौलत सिंह कोठारी (6 जुलाई 1906 - 4 फरवरी 1993 प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी, शिक्षाविद् और विज्ञान-नीति के अग्रणी थे। उन्होंने खगोल भौतिकी तथा अत्यधिक दबाव में पदार्थ के आयनीकरण पर महत्त्वपूर्ण शोध किया। रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में उन्होंने भारत में रक्षा-विज्ञान के विकास की नींव मजबूत की। वे 1961 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष बने और 196466 के शिक्षा आयोग, जिसे 'कोठारी आयोग' कहा जाता है, की अध्यक्षता की। इस आयोग ने भारतीय शिक्षा-व्यवस्था के सुधार और आधुनिकीकरण के लिए महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए।

विज्ञानकु- डॉ. दौलत सिंह कोठारी

शिक्षा का अर्थ
समझो दुनिया को
और स्वयं को।

ज्ञान से युक्त
पूर्वाग्रहों से मुक्त
युवा हों सभी।

शिक्षा सही वो
युवाओं को सिखाए
देश सेवा जो।

जीवन मूल्य
हमारा अहंकार
हो जाए शून्य।

शिक्षक वही
आचरण जिसका
स्वयं का सही।

सही चरित्र
करे तय भविष्य
सभी का मित्र।

करें मनन
डॉक्टर कोठारी के
ये हैं कथन।

3. विज्ञानकु- डॉ. अब्दुल कलाम डॉ. अवुल पकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम (15 अक्टूबर 1931 - 27 जुलाई 2015) का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम में हुआ था। वे भारत के प्रमुख वैज्ञानिक और ग्यारहवें राष्ट्रपति थे। उन्होंने भारत के पहले स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान, एस.एल.वी.-3, के विकास में परियोजना निदेशक के रूप में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने अग्नि और पृथ्वी मिसाइलों के विकास तथा स्वदेशी रक्षा-प्रौद्योगिकी को आगे बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाई। उन्हें 1997 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया। अपनी पुस्तकों, शिक्षण और विकसित भारत की परिकल्पना के माध्यम से उन्होंने युवाओं को विज्ञान और राष्ट्रनिर्माण के लिए प्रेरित किया।

विज्ञानकु डॉ0 अब्दुल कलाम

गरूड़ बनो
वर्षा में बादलों के
ऊपर उड़ो।

निराश न हों
आखिरी गलती को
गुरु बनाओ।

खुशी हो तब
परिश्रम से हल
निकले जब।

देखें सपने
हम जागते हुए
नींद में नहीं।

सीखो तपना
यदि है चमकना
सूर्य के जैसा।

खेलों में हमें
दिलाए सफलता
आक्रामकता।

करें मननडॉक्टर
कलामके सभी
कथन।

लेखिका सुरेंद्रा लखेड़ा, सान होजे, कैलिफोर्निया

आयुर्वेद में पीपल गुण धर्म और लाभकारी प्रयोग

आयुर्वेदिक स्वास्थ्य सलाह

आयुर्वेद में पीपल को परम पवित्र, औषधीय गुणों से भरपूर और त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) को संतुलित करने वाला प्रमुख वृक्ष माना गया है। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता जैसे प्राचीन ग्रंथों में पीपल के छाल, पत्ते, फल, बीज और कोपल–सभी का चिकित्सा में उपयोग बताया गया है।

जगदुरु भगवान महामुनि महर्षि श्री गर्गाचार्य ऋषि पीपल के मुख्य औषधीय महत्व और उपयोग

त्रिदोष शामक

पित्त और कफ नाशक- पीपल का स्वभाव शीतल (ठंडा) और स्वाद में कषाय (कसैला) तथा मधुर होता है। यह शरीर में बढ़ी हुई गर्मी, पित्त और कफ दोष को शांत करने में बहुत उपयोगी है।

पाचन और पेट से जुड़ी बीमारियां

कब्ज और गैस- पीपल के पके फलों का चूर्ण या पत्तों का रस पाचन तंत्र को सुचारू बनाता है और पुरानी कब्ज में राहत देता है। पेचिश और दस्त- पीपल की छाल का काढ़ा पीने से पेट का मरोड़, दस्त और पेचिश में तुरंत आराम मिलता है।

श्वसन और सांस संबंधी रोग

अस्थमा और खांसी- पीपल की छाल और फलों के चूर्ण को बराबर मात्रा में मिलाकर लेने से दमा , सांस फूलने की समस्या और पुरानी खांसी में लाभ होता है।

त्वचा रोग और घाव भरना

त्वचा की रंगत और लालिमा- पीपल की छाल का लेप दाद, खाज, खुजली और मुहांसों को ठीक करता है।घाव सुखाना- इसकी छाल के चूर्ण को घाव पर छिड़कने से रक्तस्राव रुकता है और घाव जल्दी भरता है।

विषनाशक और रक्त शोधक

रक्त साफ करना- पीपल का नियमित सेवन रक्त को शुद्ध करता है, जिससे त्वचा की चमक बढ़ती है।विष का प्रभाव कम करना- सांप या जहरीले कीड़ों के काटने पर प्राथमिक उपचार के रूप में पीपल के पत्तों का रस दिया जाता है।

मुख और दांतों की देखभाल

मसूड़ों की मजबूती- पीपल की पतली टहनी से दातून करने से दांत मजबूत होते हैं, सांसों की दुर्गंध दूर होती है और मसूड़ों से खून आना बंद होता है। तनाव और मानसिक स्वास्थ्य

पीपल के वृक्ष से प्रचुर मात्रा में ऑक्सीजन उत्सर्जित होती है। आयुर्वेद के अनुसार पीपल के वृक्ष के नीचे ध्यान लगाने या बैठने से मानसिक तनाव, घबराहट और अनिद्रा दूर होती है।

सावधानी- पीपल का उपयोग औषधीय रूप से करते समय मात्रा का ध्यान रखना आवश्यक है। किसी भी गंभीर स्थिति या नियमित सेवन के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सक की सलाह जरूर लें। आपका हर दिन शुभ मंगलमय हो ऐसी कामनाएं।

जय जगदुरु भगवान महामुनि महर्षि श्री गर्गाचार्य ऋषि।

श्रीमती दिव्या रावत गर्ग उण्डू राज
श्री हरि विष्णु कृपा भवन, श्री गर्गवास
राजबेरा, राजस्थान

तत्तापानी में नशा विरोधी मिनी

मैराथन का सफल आयोजन

हिमाचल प्रदेश के मंडी जिला के अंतर्गत ग्राम पंचायत तत्तापानी के प्रधान प्रेम रैना की पहल पर आज तत्तापानी में नशा विरोधी मिनी मैराथन का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य युवाओं को चिट्टा एवं अन्य नशीले पदार्थों के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करना, खेलकूद के प्रति प्रोत्साहित करना तथा समाज में नशामुक्ति का संदेश फैलाना था। इस आयोजन को होटल हॉट स्प्रिंग, तत्तापानी द्वारा प्रायोजित किया गया।मिनी मैराथन में 10 किलोमीटर और 3 किलोमीटर की दौड़ आयोजित की गई, जिसमें बच्चों, युवाओं, महिलाओं, पुरुषों और वरिष्ठ नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। तत्तापानी सहित सुन्नी, शिमला, मंडी और सोलन जिलों से आए प्रतिभागियों की भागीदारी ने इस आयोजन को विशेष बना दिया।पुरस्कार एवं सम्मानप्रतिभागियों का उत्साह बढ़ाने और खेल भावना को प्रोत्साहित करने के लिए कार्यक्रम में कुल ?33,500 के नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त, 165 प्रतिभागियों को

जानकारी

बच्चों, युवाओं, महिलाओं, पुरुषों और वरिष्ठ नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया तथा 18 विजेताओं को ट्रॉफी एवं मेडल प्रदान किए गए।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में करसोग से महेश राज उपस्थित रहे। उन्होंने इस पहल की सराहना करते हुए युवाओं को खेलकूद, अनुशासन और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया।प्रेम रैना ने की नशामुक्त समाज बनाने की अपीलइस अवसर पर प्रधान ग्राम पंचायत तत्तापानी प्रेम रैना ने कहा कि नशा विरोधी मिनी मैराथन आयोजित करने का विचार उनका अपना था। उन्होंने महसूस किया कि आज की युवा पीढ़ी को नशे से बचाने के लिए केवल जागरूकता की बातें करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि समाज को एकजुट करके धरातल पर सकारात्मक पहल करने की आवश्यकता है।उन्होंने कहा कि इस आयोजन का उद्देश्य केवल दौड़ प्रतियोगिता करवाना नहीं, बल्कि युवाओं को यह संदेश देना है कि जीवन में खेल, स्वास्थ्य, अनुशासन और सकारात्मक सोच का विशेष महत्व है। चिट्टा एवं अन्य नशीले पदार्थों का बढ़ता प्रचलन समाज के लिए गंभीर चिंता का विषय है। इस चुनौती से निपटने के लिए पंचायत, अभिभावकों, युवाओं, सामाजिक संगठनों और प्रत्येक नागरिक को मिलकर प्रयास करने होंगे।प्रेम रैना ने कहा कि वह चाहते हैं कि तत्तापानी से नशामुक्ति का एक मजबूत संदेश पूरे हिमाचल प्रदेश में पहुंचे और युवा पीढ़ी खेलकूद एवं रचनात्मक गतिविधियों को अपनाकर अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाए।

सत्य का पहला स्वागत विरोध से होता है

सत्य का पहला स्वागत विरोध से होता है, यदि हम सच और स्पष्ट बोलते हैं तो निश्चित ही हमारी अपने मित्र और संबंधियों से कम बनती होगी इसलिए किसी पर एक सीमा से अधिक निर्भर नहीं रहना, क्योंकि अंधेरे में स्वयं की परछाई भी साथ छोड़ देती है। सत्य के रास्ते में जो भी दुःख आए, उसे अपना प्रारब्ध समझकर, अपने कर्मों का फल मानकर, और परमात्मा की इच्छा समझकर स्वीकार कर लेना चाहिए, यदि लोग हँसी उड़ायें तो कहना हाथी बैठ जाए तो भी गधे से ऊँचा ही रहेगा। जीवन की ऊँचाइयाँ स्वयं ही खोज लेंगी हमको, बस अवसर ना छोड़िएगा, कठिनाई में मंदहास का। आपका हर दिन शुभ

मंगलमय हो ऐसी कामनाएं।

जय जगदुरु भगवान महामुनि महर्षि श्री गर्गाचार्य ऋषि।

गुरू- सूबेदार रावत गर्ग उण्डू राज
श्री हरि विष्णु कृपा, ई-07,
सेक्टर हेडक्वार्टर फिरोज़पुर कैंट,
जालन्धर कैंट, पंजाब।

अंत-शुद्धि का महापर्व है नवरात्रि

नवरात्रि पर्व आदि शक्ति मां दुर्गा की पूजा का पावन पर्व है। वैसे तो नवरात्र सालभर में कुल 4 बार आते हैं लेकिन उनमें से शारदीय एवं चैत्र नवरात्र का महत्व सर्वाधिक माना गया है। वैज्ञानिक एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से भी चैत्र तथा आश्विन नवरात्र का ही सर्वाधिक महत्व माना गया है। ऋतु विज्ञान के अनुसार ये दोनों ही महीने सर्दी अथवा गर्मी की संधि के महत्वपूर्ण मास हैं, जिनका हमारे स्वास्थ्य पर विशेष प्रभाव पड़ता है। इस वर्ष शारदीय नवरात्र की शुरूआत 11 अक्तूबर से हुई है, जो 20 अक्तूबर को खत्म होंगे और 20 अक्तूबर को दशहरा पर्व मनाया जाएगा। हिंदू पंचांग के अनुसार हर साल आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से शारदीय नवरात्र की शुरुआत होती है, जिसमें देवी दुर्गा के अलग-अलग रूपों की पूजा की जाती है। नवरात्रि के ये नौ दिन पूर्ण रूप से मां दुर्गा और उनके आठ अलौकिक अवतारों के पूजन को समर्पित हैं और नवरात्रि का हर दिन इन्हीं में से एक अवतार से जुड़ा है।मां दुर्गा के इन नौ अलौकिक अवतारों के माध्यम से सही मायनों में स्त्रीत्व के उत्कर्ष का स्वरूप पूर्णतः परिलक्षित होता है। मां दुर्गा के ये नौ रूप हैं शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री। मान्यता है कि नवरात्र के इन नौ दिनों में मां दुर्गा के अलग-अलग स्वरूपों की पूजा करने से विशेष पुण्य मिलता है और मां दुर्गा अपने भक्तों के सभी कष्ट हर लेती हैं। नवरात्रि के संबंध में एक कथानुसार देवी दुर्गा ने महिषासुर नामक असुर के साथ नौ दिन तक युद्ध किया था और नवमी की रात्रि को ही देवी ने उसका वध किया था, तभी से देवी दुर्गा को 'महिषासुरमर्दिनी' के नाम से भी जाना जाता है। विभिन्न पुराणों व शास्त्रों में उल्लेख मिलता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने भी लंका विजय से पहले मां दुर्गा की आराधना कर उनसे आशीर्वाद और युद्ध के लिए अनुमति ली थी और मां शक्ति के आशीर्वाद के कारण ही वे युद्ध जीते थे।शिवपुराण के अनुसार देवी दुर्गा की उत्पत्ति दुर्गम नामक एक महाबली दैत्य को मारने के लिए हुई थी, जिसने ब्रह्माजी से वरदान प्राप्त करने के बाद चारों वेदों को लुप्त कर दिया था। वेदों के अदृश्य हो जाने से समस्त वैदिक क्रियाएं बंद हो गई थी। उस समय ब्राह्मण और देवता भी दुराचारी हो गए थे, न कहीं कोई दान होता था, न तप किया जाता था, न यज्ञ होता था, न हवन किया जाता था, जिसका परिणाम यह हुआ कि पृथ्वी पर सौ वर्षों तक सभी धार्मिक क्रियाएं वर्ष बंद हो गई और तीनों लोकों में हाहाकार मच गया। कुएं, बावड़ी सरोवर, सरिता, समुद्र सभी सूख गए। लोग भूख-प्यास से संतप्त होकर मरने लगे। आखिरकार इन संकटों के निवारण के लिए सभी देवता महेश्वरी योगमाया की शरण में गए और योगमाया देवी दुर्गा ने दुर्गम राक्षस का वध किया। मां दुर्गा को अनंतकोटि ब्रह्मांडों की अधीश्वरी देवी माना गया है, जो सम्पूर्ण विश्व को सत्ता और स्फूर्ति प्रदान करती हैं, जिनकी शक्ति से ही ब्रह्मादि देवता उत्पन्न होते हैं, जिनसे विश्व की उत्पत्ति होती है। इन्हीं की शक्ति से शिव और विष्णु प्रकट होकर विश्व का पालन और संहार करते हैं।वास्तव में शक्ति के रूप में मां दुर्गा की पूजा का यह पर्व न केवल महिला सशक्तिकरण का प्रमाण है बल्कि स्त्री के स्वयं में शक्ति होने का उल्लास भी है और सही मायनों में यह पर्व स्त्रीत्व का आनंदोत्सव ही है। सनातन भारतीय संस्कृति में स्त्री न केवल प्रकृति का अभिन्न अंग है बल्कि शक्ति का एकमात्र स्रोत भी है और नवरात्रि पर्व इसी नारी शक्ति-स्रोत का पूजन है। भारतीय समाज के अलावा अन्य किसी भी समाज में स्त्री के अस्तित्व और उसके सामर्थ्य के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करता ऐसा पर्व देखने को नहीं मिलता। वास्तव में इस पर्व की मूल परिकल्पना ही यही है कि जो कुछ भी अच्छा है, वह स्त्री से ही सृजित या निर्मित होता है। मां दुर्गा इसी स्त्री शक्ति को प्रतिबिम्बित करती हैं, वह शक्ति, जिससे सृष्टि का श्रीगणेश हुआ, जो सृष्टि के पालन और अंत के लिए उत्तरदायी है, जो संतुलन स्थापित कर अस्तित्व को न केवल आधार प्रदान करती है बल्कि अपने अलग-अलग अवतारों से मानव जाति के जीवन का मार्ग भी प्रशस्त करती है।शक्ति के इन्हीं नौ रूपों में मां दुर्गा के पहले अवतार 'शैलपुत्री' को त्रिदेव शक्ति और सृष्टि की सृजनकर्ता माना गया है। दुर्गा का दूसरा स्वरूप 'ब्रह्मचारिणी' आध्यात्मिकता, ध्यान, शांति, समृद्धि और खुशी की प्रतीक माना गया है। तीसरा स्वरूप 'चंद्रघंटा' अधर्म-नाशक और धर्म-शासिका का प्रतिबिंब हैं। चौथा स्वरूप 'कुष्मांडा' सृष्टि का आरंभ और तमसहर्ता है। पांचवां स्वरूप 'स्कंदमाता' ज्ञान, शक्ति, अग्नि, ऊर्जा, जीवन और समृद्धि का पर्याय है। छठा स्वरूप 'कात्यायनी' महायोद्धा से रूप में महिषासुरमर्दिनी हैं। सातवां स्वरूप 'कालरात्रि' बुराई का नाश करने वाली देवी दुर्गा का हिंसक रूप है। आठवां स्वरूप 'महागौरी' पवित्रता, ऊर्जा और प्रतिभा का प्रतिनिधित्व करती है जबकि नौवां स्वरूप 'सिद्धिदात्री' सर्वव्यापक है, ज्ञान है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार नवरात्रि का यह महापर्व लोगों को आध्यात्मिक रूप से जागृत करने और उन्हें देवी दुर्गा की कृपा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है।वास्तव में नवरात्रि पर्व अंतःशुद्धि का महापर्व है, जिसका मूल उद्देश्य इंद्रियों का संयम और आध्यात्मिक शक्ति का संचय ही है। नवरात्रि के ये नौ दिन शक्ति की साधना के लिए सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। 'नवरात्रि में 'नव' का शाब्दिक अर्थ है नौ और नया जबकि 'रात्रि' शब्द अपने आप में सिद्ध का प्रतीक है। विभिन्न धर्मग्रंथों में नवरात्रि की नौ रातों को बहुत विशेष माना गया है। पुराणों के अनुसार नवरात्रि की इन नौ रातों में व्यक्ति व्रत, पूजा, मंत्र जाप, संयम, नियम, यज्ञ, तंत्र, त्राटक, योग इत्यादि करके नौ अलौकिक सिद्धियां प्राप्त कर सकता है। दुर्गा की पूजा करने से जीवन में शक्ति का संचार होता हश्वेता गोयल

सम्पर्क- 114, गली नं. 6/1, गोपाल नगर,
एम.डी. मार्ग, नजफगढ़, नई दिल्ली-110043.
फोन- 9034304041.ई
मेल:hwetawxfiw}x@gmail.com

राम चौक हनुमान द्वार, श्रीराम पार्क अब रामलीला महोत्सव

जानकारी

स्वच्छता, सुरक्षा, लाइटिंग एवं साउंड सिस्टम तथा भक्तों व दर्शकों के बैठने की सुंदर व्यवस्था की गई है

कौशांबी हुई राममय

कौशांबी क्षेत्र के धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक व्यक्तियों की उपस्थिति में कौशांबी सनातन धर्म मंदिर पर रामलीला मंचन का शुभारंभ शंखध्वनि के साथ *पार्षद श्रीमती कुसुम मनोज गोयल जी द्वारा किया गया।क्षेत्र के संपन्न व्यक्तियों के सहयोग से, क्षेत्रीय चर्चित *पप्पू चौपाल व काँरवा* के संयुक्त प्रयास से लीला को सफल बनाने में अग्रणीय भूमिका निभाई जा रही है। स्वच्छता, सुरक्षा, लाइटिंग एवं साउंड सिस्टम तथा भक्तों व दर्शकों के बैठने की सुंदर व्यवस्था की गई है। नगर महापालिका तथा सुरक्षा एजेंसियों का पूरा सहयोग मिल रहा है।मंच का संचालन पप्पू चौपाल की ओर से गीत व संगीतकार राज शर्मा हिमाचली द्वारा किया गया। लीला मंचन के दौरान भक्तों द्वारा पुष्प वर्षा होती रही, पूरा क्षेत्र जय श्री राम के जयकारों से गूंज उठा।कहते हैं, कुछ दिन पूर्व क्षेत्रीय राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्री प्रदीप भटनागर जी* के मन में यह विचार आया, फिर उन्होंने अपने मित्रों के साथ विचार साझा किया। धीरे-धीरे यह विचार क्षेत्र की आवाज बन गया तथा सभी के सहयोग से 11 अक्टूबर 2026 से सनातन धर्म मंदिर, कौशांबी में भव्य रामलीला महोत्सव का शुभारंभ हुआ है।